Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 SHISRRJ | Volume 3 | Issue 6 | ISSN : 2581- 6306

कालिदास एवं शेक्सपियर की नाट्य प्रतिभावैशिष्टय

रश्मि गुप्ता
शोध छात्रा,
संस्कृत जी.वि.वि.ग्वालियर, मध्यप्रदेश,**भारत।**

डॉ. मनीष खैमरिया
शोध निर्देशक,
प्राध्यापक एवं संस्कृत विभागाध्यक्ष, शा.एम.एल.बी. कॉलेज ग्वालियर,
मध्यप्रदेश, **भारत।**

Article Info
Volume 3, Issue 6
Page Number: 68-72
Publication Issue :
November-December-2020

Article History
Accepted : 10 Dec 2020
Published : 24 Dec 2020

सारांश – कालिदास और शेक्सपियर अपने–अपने समय के युग प्रवर्तक रहे थे। इन महाकवियों की लेखनी की सर्वव्यापकता एवं सह–हृदयता विशिष्ट प्रतीक होती है। जहाँ कालिदास के सुखात्मक नाटक हैं वहीं शेक्सपियर के दुखात्मक नाटक हुए हैं। दोनों ही कवियों ने अपनी–अपनी तीक्ष्ण बुद्धि का प्रयोग कर समाज को एक नई दिशा प्रदान की और मानव जीवन का वास्तविक रूप उपस्थित किया।

मुख्यशब्द – कालिदास, शेक्सपियर, सुखात्मक, दुखात्मक, नाट्य, संस्कृति

मानव जीवन में मानवीय मनोभावों, अन्तर्द्वन्दों संस्कारों एवं विविध परम्पराओं का वर्णन प्राप्त होता है वैसे ही भारतीय एवं पाश्चात्य साहित्य में प्राचीनकाल से लेकर वर्तमान काल तक भारत तथा इंग्लैण्ड (ब्रिटेन) के विविध नाटककारों का उल्लेख मिलता है। इन नाटककारों ने स्वयं की प्रतिभा और लेखनी के माध्यम से समाज व राष्ट्र को नूतन दिशा प्रदान की है। नाटकों का संबंध मानव की गरिमा, जीवन जीने की कला एवं उसकी संस्कृति से है। नाटक मनुष्य को सुख–दुःख दोनों पहलुओं का अवलोकन कराते हुए सही दिशा निर्देश करता है। उन्हीं शाश्वत मूल्यों को लेखक ने अपनी लेखनी से निखारने का अथक प्रयास किया है।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

''कालिदास व्यास तथा वाल्मीकि प्राचीन भारतीय इतिहास की अन्तरात्मा के प्रतिनिधि है।[1] ''संस्कृत भाषा के कालिदास, भवभूति हर्ष, दण्डी आदि महान् साहित्यकार हुए, जिन्होनें अपने जीवन को साहित्य के द्वारा समाज के समक्ष प्रस्तुत किया। उन्होंने अपनी काव्य शैली और नाटकों के माध्यम से मानव जाति और उसकी विचारधारा से अवगत कराया।

नाटक जीवन की अनुकृति है। दशरूपक में भी 'अवस्थानुकृति नार्ट्यम्' अर्थात् नाटक आदि के चरित्रों की विभिन्न अवस्थाओं की अनुकृति को नाट्य कहा गया है। पर कुछ विद्वान् अनुकृति को नाट्य नहीं मानते हैं उनका मानना है कि –

''योऽयं स्वभावो लोकस्य सुखदुःखसमन्वितः।
सोऽङ्गाद्याभिनयोपेतः नाट्यमित्यभिधीयते।।''[2]

लोक का सुखदुःखात्मक स्वभाव जब चतुर्विध अभिनयों द्वारा अभिनीत किया जाता है, तो उसे नाट्य कहते हैं। यूनानी आचार्यो के अनुसार नाट्य की उत्पत्ति धनोत्सवों से हुई है परन्तु भरत मुनि ने अपने नाट्यशास्त्र में उल्लेख किया है कि त्रेतायुग के प्रारम्भ में देवों ने मनोरंजन की सामग्री के लिए ब्रह्मा से निवदेन किया है कि–

''क्रीडनीयकमिच्छामो दृश्यं, श्रव्यं च यद् भवेत्–''[3]

इन्द्र ने कहा कि हम लोग ऐसा क्रीडनीयक चाहते हैं जिसे दृश्य व श्रव्य किया जा सके तब ब्रह्मा जी ने ध्यान लगाकर संकल्प किया कि मैं धर्म, अर्थ तथा यश को प्राप्त कराने वाले शास्त्रों के उपदेश एवं ज्ञान संग्रह से युक्त समस्त कार्यो में भावी लोक का मार्गदर्शन करने वाले समस्त शास्त्रों के अर्थ को व्यक्त करने वाले, तथा सम्पूर्ण शिल्पों को संरक्षण देने वाले पंचम वेद की इतिहास सहित रचना करता हूँ तब चारों वेदों से भिन्न–भिन्न तथ्यों को लेकर नाट्यवेद की रचना की–

एवं संकल्प्य भगवान् सर्ववेदाननुस्मरन्।
नाट्यवेदं ततश्चक्रे चतुर्वेदाऽगसम्भवम्।।
जग्राह पाठयमृग्वेदात् सामभयो गीतमेव च।
यजुर्वेदादभिनयान् रसानाथर्वणादपि।।
वेदोपवेदैः सम्बद्धो नाट्यवेदो महात्मना।
एवं भगवता सृष्टो ब्रह्मणा ललितात्मकम्।।[4]

ब्रह्मा ने चारों वेदों के अंगो से आर्विभूत होने वाले ऋग्वेद से संवाद की उत्पत्ति, समावेद से संगीत, यजुर्वेद से अभिनय तथा अथर्ववेद से श्रंगार आदि रसों को लिया। इस प्रकार सुन्दरताओं से भरा, वेदों और उपवेदों से सम्बद्ध पंचमवेद 'नाट्यवेद' रचा जो समस्त वर्णो अर्थात् द्विजों एवं शूद्रो सभी के लिए था। तत्पश्चात् भरत मुनि ने अपने पुत्रों को विधिवत नाट्य–शिक्षा प्रदान की और सर्वप्रथम भारती, सात्वती व आरभटी पर आश्रित अभिनय कराया।

कालिदास में सर्वतोमुखी प्रतिभा है। उनमें असाधारण कवित्व शक्ति का नवनवोन्मेष विद्यमान है। इन्होंने तीन नाटकों का प्रणयन किया– अभिज्ञानशाकुन्तलम्, मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशीयम्। अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक की नायिका शकुन्तला निसर्ग सुन्दरी व मुग्धा नायिका है। उसका रूप सौन्दर्य रूपलक्ष्मी के सदृश चमत्कृत है। मालविका पवित्र आचरण वाली, मनोहारिणी, सरल व नृत्यकला में दक्ष नायिका है। कालिदास ने अपनी काव्य प्रतिभा के द्वारा ही मालविका को अपनी आयु से बड़े राजा से प्रेम करते हुए दृष्टव्य कराकर यह कहने का प्रयास किया कि प्रेम करते समय मानव आयु का अवलोकन नहीं करता वह तो प्रकृति प्रदत्त स्वतः ही हो जाता है।

इन्होंने अपने नाटकों में उर्वशी का वर्णन बड़े ही मर्मस्पशी रूप में परिणीत किया है। वह त्याग और ममता की देवी है। एक स्वर्ग की अप्सरा होने पर भी सामान्य स्त्री की भाँति उसे अपने काव्य में प्रस्तुत कर भारतीय नारी के गुणों से विराजमान किया है। इस प्रकार जहाँ कालिदास के नाटक सर्वश्रेष्ठ रहे हैं वहीं आंग्ल भाषा के सुप्रसिद्ध लेखक विलियम शेक्सपियर के नाटक 'द टेम्पेस्ट' 'किंग लियर' और 'मैकबेथ' के नायक व नायिका की श्रेष्ठता भी किसी से कम नहीं है। 'द टेम्पेस्ट' नाटक के नायक प्रौस्पैरो जो कि मिरैण्डा के पिता हैं वह मिलान का सर्वश्रेष्ठ परिश्रमी, बलशाली, जादुई शक्तियों के ज्ञाता व भ्रातप्रिय राजा है। इसमें कैलीबन नाम का एक पात्र है जो प्रौस्पैरो के साथ जहाज पर रहता है और उसकी गतिविधियों में उसका सहयोग करता है।

'किंगलियर' नाटक शेक्सपियर का दुखान्त नाटक है जिसमें लियर एक पराक्रमी, कुशल व प्रतापी राजा है परन्तु मानव की सही परख करने में वह असमर्थ रहा है। कैन्ट सबसे वफादार सेवक के रूप में इसके साथ अन्त तक रहा है। इसकी तीन पुत्रियाँ गॉनरिल, रीगन व कार्डेलिया है। 'मैकबेथ' नाटक के नायक और खलनायक दोनों के रूप में हम मैकबेथ को ले सकते हैं। यह अत्याचारी, हत्यारा, लालची, दुराचारी, देशद्रोही, धोखेबाज व द्वेषपूर्ण राजा है ऐसा कोई पाप नहीं जिसके लिए उसे दोषी न ठहराया जाए–

"Macbeth is murderous, lusty, voluptuous, treacherous, declitful, intemperate, malignant, in possession of every possible sin that can be recounted."[5]

मैकबेथ लालचवश अपनी पत्नी का गुलाम बन जाता है ऐसे आचरण वाले मनुष्य को समाज तिरस्कृत व उपेक्षित और निन्दनीय दृष्टि से देखता है।

बैंको एक धार्मिक प्रवृत्ति और दूसरों का मार्गदर्शक करने वाला पात्र है। डंकन मैकबेध का प्रिय मित्र और स्कॉटलैण्ड का शासक था। मैल्कम डंकन का पुत्र था जो पिता की हत्या के बाद उसका बदला लेने का पूर्ण प्रयास करता है पर वह सफल नहीं हो पाता और शत्रुओं के द्वारा मारा जाता है। मैक्डफ एक ऐसा पात्र था जिसे मैकबेथ के षड्यन्त्र की पूर्ण जानकारी थी, वह पराक्रमी, शक्तिशाली व्यक्तित्व वाला पुरूष था।

शेक्सपियर ने नाटकों में नारी की प्रतिभा को दर्शाते हुए बताया है कि मिरैण्डा 'द टेम्पेस्ट' नाटक की एकमात्र नायिका है जिसे समाज के रीति–रिवाजों और स्त्री जाति से भी अनभिज्ञ रखा जाता है। वह अबोध बालिका की तरह अपने और प्रेमी फर्डीनैण्ड के प्रणव को भी नहीं समझ पाती है। एक स्त्री की भाँति अलंकृत होना तो वह जानती ही नहीं है।

कार्डेलिया राजालियर की सबसे छोटी पुत्री है वह अपने पिता लियर से अत्यधिक स्नेह करती है वह लम्पट और चाटुकारिता वाले शब्दों का प्रयोग नहीं करती –

I love your majesty according to my duty as sa daughter neither more nor less than that"[6]

इसकी दो बहनें गॉनरिल और रीगन है जिसे शेक्सपियर ने स्वभाव से ही लालची व छल–कपट करने वाली बताया है। जो अपने ही पिता के साथ छलावा करती हैं। शेक्सपियर ने अपनी प्रतिभा के द्वारा ही समाज में सम्माननीय स्थान प्राप्त किया है इनके नाटक भूत–प्रेत व तिलिस्म, जादू–टोने से भरे हैं जो आज वर्तमान में प्रत्यक्ष स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहे हैं।

डॉ. जॉन्सन – शेक्सपियर की दुनिया एक खिलौने की तरह है जिस तरह से संसार के लोग अलग–अलग विधाओं से खेलते हैं उसी प्रकार शेक्सपियर के नाटकों की अलग–अलग विधायें हैं जो जीवन को सारगर्भित और मौलिक बनाने का प्रयास करती है।''[7]

कालिदास के नाटकों की नायिकाएँ संस्कार युक्त थीं परन्तु शेक्सपियर की नायिकाओं में यह संस्कार नहीं मिलते केवल मात्र कार्डेलिया और मिरैण्डा ही शालीनता युक्त नारी हैं गॉनरिल, रीगन

और लेडी मैकबेथ लालची, चापलूस तथा दूसरे की वस्तु को किसी भी प्रकार अपना बनाने का प्रयास करती हैं।

निष्कर्ष :– कालिदास और शेक्सपियर अपने–अपने समय के युग प्रवर्तक रहे थे। इन महाकवियों की लेखनी की सर्वव्यापकता एवं सह–हृदयता विशिष्ट प्रतीक होती है। जहाँ कालिदास के सुखात्मक नाटक हैं वहीं शेक्सपियर के दुखात्मक नाटक हुए हैं। दोनों ही कवियों ने अपनी–अपनी तीक्ष्ण बुद्धि का प्रयोग कर समाज को एक नई दिशा प्रदान की और मानव जीवन का वास्तविक रूप उपस्थित किया।

सन्दर्भ सूची :–

महाकवि कालिदास – डॉ. रमाशंकर तिवारी – चौ.प्रकाशन वाराणसी सं. 1999

आचार्य भरत – डॉ. शिवशरण शर्मा – म.प्र. अकादमी भोपाल– सं. 1971

आचार्य भरत – डॉ. शिवशरण शर्मा – म.प्र. अकादमी भोपाल– सं. 1971

आचार्य भरत – डॉ. शिवशरण शर्मा – म.प्र. अकादमी भोपाल– सं. 1971

Macbeth-Dr. Gunjan Chaturvedi Mahalaxmi Prakashan Agra 1608

King lear - B.L. Samdani - Lakshmi Narain Agar¡l Agra 1608

Coleridge on Shakespeare - R.A. Foakes, London 1971